भारत में तकनीकी मंदी की आशंका

प्रलिम्सि के लयि

भारतीय रज़िर्व बैंक, सकल घरेलू उत्पाद, तकनीकी मंदी, नाउकास्ट, व्यापार चक्र

मेन्स के लयि

तकनीकी मंदी का अर्थ और नहितिार्थ, भारतीय अर्थव्यवस्था की मौजूदा स्थति

चर्चा में क्यों?

भारतीय रज़िर्व बैंक (RBI) द्वारा नवंबर माह के लयि जारी हालयि मासकि बुलेटनि के मुताबकि, वत्तिीय वर्ष 2020-21 की दूसरी तमिाही (जुलाई-सतिंबर) में भारतीय अर्थव्यवस्था के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में 8.6 प्रतशित का संकुचन दर्ज कयिा जा सकता है।

- इस आधार पर रज़िर्व बैंक ने अपने मासकि बुलेटनि में कहा है कि भारत मौजूदा वत्तिीय वर्ष की पहली छमाही में तकनीकी मंदी (Technical Recession) में प्रवेश कर सकता है।

प्रमुख बदिु

- रज़िर्व बैंक ने नवंबर माह के अपने मासकि बुलेटनि में पहली बार 'नाउकास्ट' (Nowcast) जारी कयिा है, जसिके अनुमान के मुताबकि मौजूद वत्तिीय वर्ष की दूसरी तमिाही में भी अर्थव्यवस्था में संकुचन हो सकता है।
  - प्रायः भारतीय रज़िर्व बैंक (RBI) और इसी तरह के अन्य संस्थानों द्वारा पूर्वानुमान अथवा 'फोरकास्ट' (Forecast) जारी कयिा जाता है, कति रज़िर्व बैंक ने पहली बार आधुनकि प्रणाली का उपयोग कर 'नाउकास्ट' (Nowcast) जारी कयिा है, जसिमें एकदम नकिट भवषि्य में अर्थव्यवस्था की स्थति की बात की गई है। इस तरह नाउकास्ट में एक प्रकार से वर्तमन की ही बात की जाती है।
- ध्यातव्य है कि मौजूदा वत्तिीय वर्ष की पहली तमिाही (अप्रैल से जून) में भी भारतीय अर्थव्यवस्था के सकल घरेलू उत्पाद (GDP) में रकिॉर्ड 23.9 प्रतशित का संकुचन दर्ज कयिा गया था, जो कि बीते एक दशक में भारतीय अर्थव्यवस्था का सबसे खराब प्रदर्शन था।

क्या होती है 'तकनीकी मंदी'?

- सरल शब्दों में 'तकनीकी मंदी' का अर्थ ऐसी स्थति से होता है जब कसिी देश की अर्थव्यवस्था में लगातार दो तमिाहयिों तक संकुचन देखने को मलिता है।
- कसिी भी अर्थव्यवस्था में जब वस्तुओं और सेवाओं का समग्र उत्पादन, जसि आमतौर पर GDP के रूप में मापा जाता है- एक तमिाही से दूसरी तमिाही तक बढ़ता है, तो इसे अर्थव्यवस्था के **वसि्तार की अवधि (Expansionary Phase)** कहा जाता है।
  - वहीं इसके वपिरीत जब वस्तुओं और सेवाओं का समग्र उत्पादन एक तमिाही से दूसरी तमिाही में कम हो जाता है तो इसे अर्थव्यवस्था **मंदी की अवधि (Recessionary Phase)** कहा जाता है।
  - इस तरह ये दोनों स्थतियिाँ एक साथ मलिकर कसिी अर्थव्यवस्था में '**व्यापार चक्र**' (Business Cycle) का नरि्माण करती हैं।
- यदि कसिी अर्थव्यवस्था में मंदी की अवधि (Recessionary Phase) लंबे समय तक रहती है तो यह कहा जाता है कि अर्थव्यवस्था में मंदी (Recession) की स्थति आ गई है। अन्य शब्दों में हम कह सकते हैं कि जब अर्थव्यवस्था में GDP एक लंबी अवधि तक संकुचति होती रहती है, तो माना जाता है कि अर्थव्यवस्था मंदी की स्थति में पहुँच गई है।
  - हालाँकि मंदी की अवधि की कोई सार्वभौमकि स्वीकृत समयावधि नहीं है, यानी यह तय नहीं है कि कतिने समय तक अर्थव्यवस्था में संकुचन को मंदी कहा जाएगा।
  - साथ ही यहाँ यह भी तय नहीं है कि क्या GDP को मंदी का नरि्धारण करने का एकमात्र कारक माना जा सकता है।
  - कई जानकार मानते हैं कि मंदी का नरि्धारण करते समय अर्थव्यवस्था में वस्तुओं और सेवाओं के समग्र उत्पादन के साथ-साथ अन्य कारकों जैसे- बेरोज़गारी और नजिी खपत आदि का ध्यान रखा जाना चाहयि।
- इन्हीं कुछ समस्याओं से बचने के लयि अर्थशास्त्री प्रायः लगातार दो तमिाहयिों में वास्तवकि सकल घरेलू उत्पाद (Real GDP) में गरिावट आने को

'तकनीकी मंदी' के रूप में संबोधित करते हैं।

कितनी लंबी होती है मंदी की अवधि?

- आमतौर पर मंदी कुछ तिमाहियों तक ही रहती है और यदि इसकी अवधि एक वर्ष या उससे अधिक हो जाती है तो इसे अवसाद अथवा महामंदी (Depression) कहा जाता है।
- हालाँकि अवसाद अथवा महामंदी की स्थिति किसी भी अर्थव्यवस्था में काफी दुर्लभ होती है और कम ही देखी जाती है। ज्ञात हो कि आखिरी बार अमेरिका में 1930 के दशक में महामंदी (Depression) की स्थिति देखी गई।
- वर्तमान स्थिति को देखते हुए कहा जा सकता है कि यदि भारतीय अर्थव्यवस्था को अवसाद अथवा महामंदी (Depression) की स्थिति में जाने से बचना है और मंदी की स्थिति से बाहर निकलना है तो जल्द-से-जल्द महामारी के प्रयास को रोकना होगा।

भारत के संदर्भ

- रिज़र्व बैंक के अनुमान के अनुसार, मौजूदा वित्तीय वर्ष की दूसरी तिमाही में भी अर्थव्यवस्था में संकुचन देखने को मिल सकता है, जबकि वित्तीय वर्ष की पहली तिमाही में भारतीय अर्थव्यवस्था में रिकॉर्ड 23.9 प्रतिशत का संकुचन दर्ज किया गया था।
- इस तरह हम कह सकते हैं कि भारत अब आधिकारिक तौर पर 'तकनीकी मंदी' की स्थिति में प्रवेश करने वाला है, हालाँकि इस मंदी को अप्रत्याशित नहीं माना जाना चाहिये, क्योंकि कोरोना वायरस महामारी और देशव्यापी लॉकडाउन के कारण भारत आर्थिक मोर्चे पर काफी प्रभावित हुआ है।
- मार्च माह में देशव्यापी लॉकडाउन की घोषणा के साथ ही कई अर्थशास्त्रियों ने यह घोषणा कर दी थी कि भारत मंदी की चपेट में आ सकता है, हालाँकि यहाँ हमें यह भी नहीं भूलना चाहिये कि महामारी की शुरुआत से पूर्व भी भारतीय अर्थव्यवस्था का प्रदर्शन कुछ संतोषजनक नहीं रहा था।
- अधिकांश अर्थशास्त्रियों का अनुमान है कि मौजूदा वित्तीय वर्ष की तीसरी तिमाही में भी भारतीय अर्थव्यवस्था में काफी अधिक संकुचन देखने को मिल सकता है।

CONTRACTION IN INDIA, ELSEWHERE

Quarterly Real GDP growth rate (in %)

	October to December 2019	January to March 2020	April to June 2020	July to September 2020
India	4.1	3.1	-23.9	-8.6*
US	2.3	0.3	-9	-2.9
UK	1	-2.1	-21.5	-9.6
China	6	-6.8	3.2	4.9
Brazil	1.7	-0.3	-11.4	NA
Indonesia	5	3	-5.3	-3.5
South Africa	-0.5	0.1	-17.1	NA

//

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/what-is-a-technical-recession